डॉ० सुधीर कुमार सिंह, प्राचार्य, सोमनाथ महिला कॉलेज
कांडाराम, ग्रामीण समाजशास्त्र, पत्र संख्या-IV
बी०ए० (H), खण्ड-II

ग्रामीण परिवार की परिभाषा एवं विशेषताएँ — ग्रामीण सामाजिक संस्थाओं में परिवार का प्रमुख स्थान है। परिवार ही ग्रामीण समाज की मूल आधारशिला है। प्रारम्भ में परिवार का निर्माण ~~इसकी~~ प्राणीशास्त्रीय आवश्यकताओं के कारण हुआ जो आगे-चलकर मानव की अनेक सामाजिक सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का ~~साधन~~ साधन बन गया। परिवार के कारण ही आज मानव जाति अमर बनी हुई है। मैकाइवर एवं पेज परिवार को परिभाषित करते हुए लिखते हैं "परिवार वह समूह है जो लिंग संबंध पर आधारित होता है और यह ~~इतनी~~ काफी छोटा एवं इतना स्थायी है कि बच्चों की उत्पत्ति और पालन-पोषण करने योग्य है।" इस परिभाषा से स्पष्ट है कि परिवार ही वह समूह है जहाँ स्त्री-पुरुष के यौन संबंधों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है। परिवार में ही संतान जन्म लेती है उनका भरण-पोषण किया जाता है। ग्रामीण परिवार ग्रामीण पर्यावरण ~~और~~ और कारकों से प्रभावित होते हैं। कृषि की प्रधानता एवं प्रकृति

पर निर्भरता ग्रामीण समाज की मूल विशेषताएं हैं जो परिवार को भी प्रभावित करती है। **ग्रामीण परिवार की विशेषताएं** —

विश्व के सभी कृषि प्रधान समाजों में परिवार का संयुक्त रूप देखने को मिलता है। इसमें केन्द्रीय परिवार की तुलना में सदस्यों की संख्या अधिक होती है और दो-तीन पीढ़ियों के सदस्य साथ-साथ रहते हैं। ग्रामीण परिवार अधिकांशतः पितृस्थानीय, पितृवंशीय एवं पितृसत्तात्मक होते हैं। ऐसे परिवारों में सम्पत्ति का हस्तान्तरण पिता से पुत्र को होता है, बच्चों का वंश परिचय ~~पिता~~ पिता के परिवार द्वारा दिया जाता है और विवाह के बाद पत्नी पति के घर पर आकर निवास करती है। ग्रामीण परिवार की मूल विशेषताएं इस प्रकार हैं—

(1) अधिकाधिक सजातीयता (Greater Homogeneity)— दौसाई का कहना है कि ग्रामीण परिवार नगरीय परिवारों की तुलना में अधिक सजातीय, स्थिर, संगठित तथा सजीव रूप से कार्य करने वाला होता है। परिवार के पति-पत्नी,

माता-पिता और बच्चों के बीच पाए जाने वाले संबंध शहरी परिवारों की अपेक्षा अधिक स्थिर और प्रगाढ़ होते हैं। सदस्यों के विचारों, विश्वासों, आदर्शों, मूल्यों और कार्य करने के तरीकों में समानता पाई जाती है।

(2) संयुक्त परिवार की प्रधानता (Dominance of Joint Family)- ग्रामीण परिवारों में संयुक्त परिवार की प्रधानता होती है। ऐसे परिवारों में तीन या अधिक पीढ़ियों के सदस्य साथ-साथ रहते और खाते-पीते हैं। उनकी सम्पत्ति सामूहिक होती है और वे सभी सामान्य पूजा में भाग लेते हैं। ऐसे परिवारों में कई बार विवाह संबंधी व अन्य नातेदार भी साथ रहने लगते हैं।

(3) कृषक गृहस्थी पर आधारित (Based on Peasant House-hold)- ग्रामीण परिवारों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। परिवार के सभी सदस्य कृषि कार्य में लगे होते हैं। इसलिए ही ग्रामीण परिवारों को कृषक परिवार भी कहते हैं। कृषक गृहस्थ को बल प्रदान करने में नातेदारी संबंध, सामूहिक निवास, सामूहिक भूमि तथा धार्मिक

क्रियाओं का सामूहिक रूप से सम्पन्न करना महत्त्वपूर्ण कारण है। परिवार की भूमि सामूहिक होने से सभी सदस्य सहयोग द्वारा उस पर कार्य करते हैं।

(4) अधिक अनुशासन एवं अन्योन्याश्रितता (Greater Discipline and Interdependence)- नगरीय परिवारों की तुलना में ग्रामीण परिवार अधिक अनुशासित होते हैं। वहाँ बड़े बुजुर्गों का पूरा सम्मान पाया जाता है और उनकी आज्ञा का उल्लंघन करने पर सामाजिक निन्दा का सामना करना होता है। परिवार का वयोवृद्ध व्यक्ति सभी सदस्यों पर नियंत्रण रखता है।

परिवार ही व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व मनोरंजन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। सदस्यों में परस्पर निर्भरता पाई जाती है। बीमारी, बुढ़ापा और कठिनाई के समय सभी सदस्य परस्पर एक दूसरे की सहायता करते हैं। परिवार के सदस्य ही एक दूसरे की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोग प्रदान करते हैं, इससे पारस्परिक निर्भरता बढ़ जाती है।

क्रमशः: जारी